→ कला और सांस्कृतिक संकेत

- गुफा चित्रकला (विशेषकर भीमबेटका)
- प्रतीकात्मक सोच का विकास
- समूह जीवन और सामाजिक संगठन

→ व्याख्या (Interpretation) :—

1. भारतीय पुरापाषाण संस्कृति स्वतंत्र नहीं, बल्कि वैश्विक मानव प्रवास का हिस्सा थी।
2. पर्यावरणीय परिवर्तनों ने तकनीकी विकास को प्रेरित किया।
3. भारतीय उपमहाद्वीप मानव विकास की निरंतर प्रयोगशाला रहा।

→ आलोचनात्मक मूल्यांकन (Critical Analysis) :—

सकारात्मक पक्ष :

- विस्तृत क्षेत्रीय सर्वेक्षण
- वैज्ञानिक डेटिंग पद्धतियों का उपयोग
- तुलनात्मक अध्ययन

सीमाएँ :

- प्रारंभिक शोध में रेडियोकार्बन तकनीक सीमित थी।
- कुछ काल निर्धारण बाद में संशोधित हुए।

Scanned with OKEN Scanner

Mesolithic Period
(मध्य पाषाण काल)

प्रस्तावना :—

मेसोलिथिक (मध्य पाषाण) काल पुरा पाषाण काल और नव पाषाण काल के बीच की संक्रमण अवस्था है।

Period :— लगभग 10,000 ईसा पूर्व से 6,000 / 4,000 ईसा पूर्व (भारत मे क्षेत्रानुसार भिन्नता है)

यह काल जलवायु परिवर्तन (हिमयुग के अंत) और मानव जीवन शैली मे महत्वपूर्ण बदलाव का साक्षी है।

→ काल-परिस्थित (Climatic context) :—

- प्लाइस्टोसीन से होलोसीन (Holocene) मे संक्रमण।
- जलवायु अपेक्षाकृत गर्म और आर्द्र हुई।
- घास के मैदान, झीलो और नदियों का विस्तार।
- जैव विविधता में वृद्धि।

जलवायु परिवर्तन ने मानव अर्थव्यवस्था को शिकार-संग्रह से अर्ध-स्थायी जीवन की ओर प्रेरित किया।

→ प्रमुख विशेषताएँ :—

1. औजार तकनीक — Microlithic industry
   - छोटे आकार के पत्थर उपकरण (1-5 सेमी)
   - ब्लेड, बुरिन, स्क्रेपर, त्रिकोणीय और अर्ध-चंद्राकार उपकरण।
   - प्रायः क्वार्टज और चर्ट से निर्मित
   - लकड़ी या अस्थि के साथ जोड़कर संयुक्त औजार बनाए जाते थे।

विशेषता :—

Microlithic का प्रयोग तीर-कमान मे —

शिकार की दक्षता में वृद्धि।